“... पहिले अन्ताकिया में”
(11:19-30)

किसी बात के लिए पहला समय विशेष होता है। 1876 में, अलेग्ज़ैन्डर ग्राहम बेल ने अपने कपड़ों पर तेज़ाब बिखराया और अनजाने में अपने नये आविष्कार, टेलीफोन का पहला संदेश भेजा: “मि. वॉटसन, इधर आओ। मुझे तुम्हारी आवश्यकता है।” 1938 में, पहली बार किसी घटना को टेलीविज़न पर सीधा प्रसारित करने के लिए एनबीसी से एक मोबाइल टेलीविज़न यूनिट ने भड़की हुई आग की तरफ अपने कैमरों को घुमा दिया। 1951 में, संसार के काम के ढंग को बदलते हुए, आईबीएम ने पहला कम्प्यूटर निकाला। 1969 में, हम में से कितने ही स्तब्ध रह गए थे जब नील आर्मस्ट्रॉन्ग चांद पर चलने वाला पहला व्यक्ति बना था।

व्यक्तिगत रूप से “पहिले बातें” भी अपने में विशेष होती हैं। मुझे याद है जब मैंने पहली बार अपनी पत्नी को देखा था। मुझे वे विशेष पल याद आते हैं जब मैंने अपनी तीनों बेटियों में से हर एक को, और अपने नातों को पहली बार देखा था। इन पहली बातों की सूची में मेरी पहली कार, मेरा पहला प्रवचन, और मेरा फ्रिटॉस और डॉ. पिपर जैसे पसन्दीदा सनैक्स को पहली बार चखना भी जुड़ सकता है।

कुछ पहले हुई बातें महत्वपूर्ण होती हैं और कुछ इतनी महत्वपूर्ण नहीं भी होती हैं। अत्यधिक महत्वपूर्ण पहली बात प्रेरितों 11:26 में मिलती है: “... और चेले सब से *पहिले* अन्ताकिया ही में मसीही कहलाए।” पदनाम “मसीही” इतना प्रचलित हो चुका है कि कइयों के लिए यह जानना आश्चर्यजनक होगा कि कलीसिया के आरम्भिक दिनों में इस नाम का उपयोग नहीं होता था। इसका आरम्भ कैसे हुआ? यह *अन्ताकिया में* ही क्यों आरम्भ हुआ? ये कुछ ऐसे प्रश्न हैं जिन पर हम इस पाठ में ध्यान देंगे।

हमारा यह पाठ अन्ताकिया के नगर पर केन्द्रित है।[1] 11:19-30 में, लूका का कलीसिया के कार्य का केन्द्रबिन्दु यरूशलेम से बदलकर अन्ताकिया पर हो जाता है। अध्याय 13 से आगे, हम अन्ताकिया को पौलुस की मिशनरी यात्राओं के कार्य के लिए मुख्यालय के रूप में देखेंगे।

स्पष्ट तौर पर, यदि आप और मैं परमेश्वर की योजना के लिए किसी नगर को ढूंढ़ रहे होते, तो सम्भवत: हम अन्ताकिया को न चुनते। उस समय सीरिया का अन्ताकिया संसार के बड़े नगरों में से एक था। सिल्यूकस निकेटर[2] द्वारा अपने पिता, ऐन्तियोकुस प्रथम[3] के नाम पर बनाया, अन्ताकिया बढ़कर विकसित हुआ, यहां तक कि यह विश्व का तीसरा सबसे बड़ा नगर बन गया।[4] यह सुन्दर नगर, राजनीतिक और व्यापारिक उपक्रम

का केन्द्र था। संसार के सबसे दुष्ट नगरों में से यह कुरिन्थुस के बाद दूसरा था। नगर के थोड़ा दक्षिण की ओर डैफ़नी की समाधि थी, जहां पर तथाकथित आराधकों ने तथाकथित महिला पुरोहितों का डैफ़नी द्वारा पीछा करके (व्यभिचार करते[5]) यूनानी देवता अपोलोस की दंतकथा फैला दी। अन्ताकिया की चरित्रहीनता इतनी प्रसिद्ध थी कि जब रोम का नैतिक पतन हुआ, तो एक कवि ने कहा था कि ओरोन्टिस का मल-जल तिबेर में बह गया था। (ओरोन्टिस वह नदी थी जिस पर अन्ताकिया बसा हुआ था और तिबेर वह नदी थी जिस पर रोम)। आकार में विशालतम, दिखने में पूरी तरह से भौतिक, पूरी तरह भ्रष्ट, अन्ताकिया यरूशलेम के बिल्कुल विपरीत था। फिर भी, अन्ताकिया प्रेरितों के काम की पुस्तक के अन्तिम भाग में परमेश्वर के पूर्व प्रबन्ध से उसकी योजनाओं और उद्देश्यों का मुख्य केन्द्र बन गया था। अन्ताकिया परमेश्वर की सच्चाई सिखाने के लिए एक सबक था कि सुसमाचार सचमुच सब लोगों के लिए है!

हम पहले ही उस एक ''पहिले'' का उल्लेख कर चुके हैं जो अन्ताकिया में हुआ। अपने पाठ का अध्ययन करते हुए, हम इस सीरियाई नगर में हुई कई महत्वपूर्ण पहलों के उदय होने को देखेंगे।

''सब के लिए'' सुसमाचार का पहली बार सब में प्रचार किया गया (11:19, 20)

11:19 में लूका ने वह धागा निकाला जो अध्याय 8 में अटका हुआ था। 8:1, 4 में, हम पढ़ते हैं:

> उसी दिन [जिस दिन स्तिफनुस की हत्या हुई] यरूशलेम की कलीसिया पर बड़ा उपद्रव होने लगा और प्रेरितों को छोड़ सब के सब यहूदिया और सामरिया देशों में तितर बितर हो गए (आयत 1)।

> जो तितर बितर हो गए थे, वे सुसमाचार सुनाते हुए फिरे (आयत 4)।

अध्याय 11 से पहले, लूका ने फलस्तीन के आस पास किए गए प्रचार पर ध्यान केन्द्रित रखा। अब उसने ध्यान दिया कि समय बीतने के साथ-साथ कलीसिया के सदस्य दूर-दूर तक अपने साथ यीशु का संदेश लेकर घूमे थे: ''सो जो लोग उस क्लेश के मारे जो स्तिफनुस के कारण पड़ा था, तितर बितर हो गए थे, वे फिरते-फिरते फीनीके और कुप्रुस और अन्ताकिया में पहुंचे'' (आयत 19क)। फीनीके भूमध्य तट के साथ लगती 15 मील चौड़ी भूमि की एक पट्टी थी जो फलस्तीन के उत्तरी किनारे से होती हुई उत्तर की ओर 120 मील तक फैली हुई थी।[6] किसी समय (लूका ने यह नहीं बताया कि कब), चेले जो तितर-बितर हो गए थे, सुसमाचार का प्रचार करते और मण्डलियां स्थापित करते हुए फीनीके के उत्तर की ओर निकल गए थे।[7] वहां से, कई समुद्र के रास्ते जहाज़ पर बैठकर

सुसमाचार के प्रचार के लिए कुप्रुस के टापू की ओर निकल गए,[8] जबकि अन्य उससे भी दूर सीरिया की तरफ निकल गए और अन्ताकिया में प्रचार करने लगे। तथापि, यीशु के अन्य अनुयायियों की तरह, तब वे ''यहूदियों को छोड़ किसी और को वचन न सुनाते थे'' (आयत 19ख)।

फिर उनके दक्षिण में कुछ महत्वपूर्ण घटनाएं घटीं। पहली बार अन्यजातियों में सुसमाचार का प्रचार हुआ और अन्यजातियों को कलीसिया की संगति में ग्रहण कर लिया गया था (प्रेरितों 10)। उत्तर में पता चला कि ''परमेश्वर ने अन्यजातियों को भी जीवन के लिए मन फिराव का दान दिया है'' (11:18)।[9] परिणामस्वरूप, ''उन में से कितने कुप्रुसी और कुरेनी[10] थे, जो अन्ताकिया में आकर यूनानियों को भी प्रभु[11] यीशु के सुसमाचार की बातें सुनाने लगे''[12] (आयत 20)। ''यूनानियों'' यूनानी भाषा बोलने वाले अन्यजातियों को कहा गया।[13] जहां तक लिखित वचन बताता है, लोगों ने पहली बार धैर्यपूर्वक अन्यजातियों को यीशु के बारे में बताने के लिए ढूंढा! (याद रखिए, कुरनेलियुस के पास पतरस के प्रचार करने में *परमेश्वर* ने पहल की थी, पतरस ने नहीं।) हम उन सुसमाचार प्रचारकों के नाम नहीं जानते जो बिना किसी जाति भेद के सभी मनुष्यों से प्रेम करते थे[14] परन्तु परमेश्वर जानता है। खोए हुए पापियों में वचन को बताना आवश्यक है; श्रेय पाने के लिए नहीं।

पहली बार ''सब के लिए'' एक मण्डली की स्थापना हुई थी (11:21)

उन अनाम नायकों द्वारा अन्ताकिया में अन्यजातियों के साथ सुसमाचार बांटने पर, परमेश्वर ने उनके प्रयासों को आशीष दी। ''और प्रभु का हाथ उन पर था'' (आयत 21क)। ईश्वरीय स्वीकृति का संकेत देने के लिए लूका द्वारा पुराने नियम के वाक्यांश का इस्तेमाल किया गया था (13:11; तु. लूका 1:66)। कई बार स्वीकृति आश्चर्यकर्मों के द्वारा दी जाती थी (4:30); शायद यहां भी ऐसा ही हुआ था।[15]

परमेश्वर की आशीष के कारण सुसमाचार के प्रचार से ''बहुत लोग विश्वास करके प्रभु की ओर फिरे'' (आयत 21ख)। मूर्तिपूजा से थके हुए, अन्यजातियों के ''बहुत लोगों'' ने वचन पर कुरनेलियुस और उसके घराने की तरह बपतिस्मा लेकर (गलतियों 3:26, 27) प्रभु में ''विश्वास'' किया और ''प्रभु की ओर फिरे''[16] (10:48) और परमेश्वर द्वारा कलीसिया में मिलाए गए थे।[17]

एक ऐसी नई मण्डली की स्थापना हो गई थी, जैसी पहले कभी नहीं थी। इसमें अन्यजातियों की बहुतायत थी,[18] परन्तु इसमें यहूदी सदस्य भी थे।[19] यहूदी और अन्यजाति अपनी सभाओं में कन्धे से कन्धा मिलाकर बैठते थे। वे मिलकर वचन सुनते, मिलकर प्रार्थना करते, परमेश्वर की महिमा करते और प्रभु भोज में भाग लेते थे। पहली बार यहूदियों और अन्यजातियों ने उसी मण्डली के रूप में एक दूसरे के साथ आराधना की, प्रभु के लिए काम किया, और भोजन किया। यीशु ने उनके बीच की दीवारों को न तोड़ा होता, अन्ताकिया की एक ओर यहूदी मण्डली और दूसरी ओर अन्यजाति मण्डली की

बात अवश्य ही बुरी लगती? यदि यीशु ने उन्हें *एक* न किया होता? (देखिए इफिसियों 2:15, 16; गलतियों 3:26–28)।

पहली बार "सब के लिए" यहूदी दिलचस्पी का प्रदर्शन हुआ था (11:22-24)

जिस प्रकार अन्यजातियों में पतरस के प्रचार की बात उत्तर में पहुंची उसी प्रकार एक अन्यजाति मण्डली की स्थापना की बात दक्षिण में पहुंच गई। "तब उनकी चर्चा यरूशलेम की कलीसिया के सुनने में आई" (आयत 22क)। पहले, जब प्रेरितों ने सुना था कि सामरियों ने वचन को ग्रहण कर लिया है, तो उन्होंने पतरस और यूहन्ना को भेजा था (8:14), अब यरूशलेम की कलीसिया "ने बरनबास को अन्ताकिया भेजा" (11:22ख)।[20]

साधारणतया यह माना जाता है कि यरूशलेम में कलीसिया अन्यजातियों की मण्डली की बात से घबरा गई थी और उन्होंने स्थिति का जायज़ा लेने के लिए बरनबास को वहां भेजा था। शायद यरूशलेम में कलीसिया के *कुछ* लोग परेशान हो गए थे (उदाहरण के लिए, "खतना किए हुए" लोगों में से, 11:2) और यरूशलेम में कलीसिया के अगुवे उन्हें शान्त करना चाहते थे, परन्तु मुझे संदेह है कि बरनबास को भेजने का उनका मुख्य उद्देश्य यही हो। मुझे इसमें संदेह है क्योंकि कुछ समय पहले, यरूशलेम के मसीही मिलकर "परमेश्वर की बड़ाई करके कहने लगे, तब तो परमेश्वर ने *अन्यजातियों* [केवल कुरनेलियुस और उसके घराने को नहीं, बल्कि सामान्य रूप से अन्यजातियों] को भी जीवन के लिए मन फिराव का दान दिया है" (11:18)। मुझे इसमें उस आदमी के कारण भी संदेह है जिसे उन्होंने भेजा। उन्होंने "गांठों को जांचने के लिए" निर्णायक को नहीं बल्कि कलीसिया में एक बहुत ही उदार आदमी को भेजा, वह ऐसा आदमी था जिसे हर व्यक्ति में और हर हालात में भलाई ही दिखाई देती थी, वह आदमी जो रूढ़िवादी था, इस कारण नहीं बल्कि अपने प्रेम के कारण जाना जाता था। उन्होंने बरनबास को भेजा (4:36; 9:26, 27)। अन्त में, मुझे उस काम के कारण संदेह है जो बरनबास ने वहां पहुंचकर किया। अध्याय 3 का अध्ययन करते समय, हमने सुझाव दिया था कि हम पतरस और यूहन्ना के मन्दिर में जाने के उद्देश्य को यह देखकर खोज सकते हैं कि वहां जाकर उन्होंने क्या *किया।*[21] उसी प्रकार कलीसिया द्वारा बरनबास को भेजने का कारण हम यह देखकर खोज सकते हैं कि उसने अन्ताकिया में पहुंचकर क्या किया। उसने काम का निरीक्षण करके यरूशलेम में रिपोर्ट नहीं भेजी। बल्कि, वह उन्हें *प्रोत्साहित* करने लगा था (आयत 23)।

यरूशलेम की कलीसिया के प्रेम तथा समर्थन का पहला और प्रमुख काम बरनबास को अन्ताकिया में भेजना था। वे चाहते थे कि अन्ताकिया की स्थापित नई मण्डली यह जान ले कि वे उनके पीछे थे। इसलिए, उन्होंने उस विशेष कार्य के लिए सबसे उपयुक्त व्यक्ति को भेजा।[22] क्योंकि बरनबास कुप्रुस में जन्मा था (4:36), अन्ताकिया उसका जाना पहचाना क्षेत्र था। वह कुप्रुस से अन्ताकिया जाने वालों का मित्र भी होगा। फिर, एक यूनानी भाषी यहूदी होने के कारण,[23] बरनबास अन्ताकिया के बहुवादी समाज के सामने

आने वाली मुश्किलों के प्रति अधिक संवेदनशील होगा। यरूशलेम की कलीसिया की ओर से बरनबास को भेजना आध्यात्मिक कूटनीति का कमाल था।[24]

आयत 23 टिप्पणी करती है कि ''वह वहां (अन्ताकिया में) पहुंचकर, और परमेश्वर के अनुग्रह को देखकर आनन्दित हुआ'' (आयत 23क)। जब बरनबास ने यहूदियों को वचन ग्रहण करते देखा, जब उसने देखा कि किस प्रकार यहूदी और अन्यजाति एक दूसरे से प्रेम करते हैं, तो उसका मन झूम उठा। उनकी शुरुआत बहुत अच्छी थी, सो उसने ''सब को उपदेश दिया कि तन मन लगाकर प्रभु से लिपटे रहो'' (आयत 23ख)।[25] आरम्भ करना एक बात है; लगे रहना दूसरी बात।

आयत 24 बरनबास की आध्यात्मिक छवि को दर्शाती है: ''वह एक भला मनुष्य था; और पवित्र आत्मा और विश्वास से परिपूर्ण था।'' प्रेरितों के काम की पुस्तक के पन्नों पर बहुत से भले लोगों के नाम भरे पड़े हैं, परन्तु लूका द्वारा ''भला'' केवल बरनबास को ही *कहा* गया। जो उसे देखते थे वे यह विचार किए बिना नहीं रह सकते, कि ''वह एक *भला* मनुष्य है।'' वाक्यांश ''विश्वास और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण था[26]'' को पहले एक और यूनानी भाषी यहूदी, स्तिफनुस के लिए इस्तेमाल किया गया था (6:5)। बरनबास एक विशेष व्यक्ति था।

आयत 24 का अन्तिम भाग बरनबास के प्रोत्साहन का फल बताता है: ''और बहुत से लोग प्रभु में आ मिले।'' कलीसिया के आत्मिक विकास पर उसके ज़ोर के कारण कलीसिया का संख्यात्मक विकास हुआ। शायद संख्या में हम उतना नहीं बढ़ रहे हैं जितना बढ़ना चाहिए क्योंकि हम उतना आत्मिक विकास नहीं कर रहे हैं जितना हमें करना चाहिए।

पहली बार ''सब के लिए'' प्रेरित का उपयोग हुआ (11:25, 26)

अन्ताकिया में चाहे किसी के भी स्वप्न से बढ़कर काम हो रहा था, बरनबास ''शाऊल को ढूंढने के लिए तरसुस को चला गया'' (आयत 25)। शाऊल को पिछली बार अध्याय 9 में देखा गया था जब यरूशलेम में यूनानी भाषा बोलने वाले यहूदियों ने उसकी हत्या करने की कोशिश की थी और यरूशलेम में भाइयों ने उसे जहाज़ में बिठाकर उसके अपने नगर, तरसुस में भेज दिया था। सात या इससे अधिक वर्षों तक, शाऊल ने गुमनामी में परिश्रम किया था। अब बरनबास डेढ़ सौ मील चलकर उसे ढूंढ़ने आया था।

बहुत से लोगों का मानना है कि बरनबास अन्ताकिया में काम से अत्यधिक प्रभावित हुआ था और उसने कुछ राहत के लिए शाऊल को ढूंढ़ना चाहा। तथापि, अन्ताकिया में केवल बरनबास ही अकेला काम करने वाला नहीं था; काम का बोझ अकेले उसी के कंधों पर नहीं था (13:1)। यह अधिक युक्तिसंगत है कि, अन्यजातियों के साथ काम करते हुए, बरनबास ने उसे याद रखा जिसे यीशु द्वारा विशेष तौर पर अन्यजातियों में काम करने के लिए अलग किया गया था। उस आदमी का नाम था शाऊल, जिसे (सभी व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए) तरसुस से निकाल दिया गया था। बरनबास, जो सदैव प्रोत्साहन देने

वाला था, ने शाऊल को ढूंढा ताकि उसे अपनी अद्वितीय योग्यता को पूरा करने का अवसर मिल सके।[27]

मूल भाषा के, अनुवादित शब्द ''शाऊल को ढूंढ़ने'' और ''जब वह उसे मिल गया था'' संकेत देते हैं कि बरनबास का काम आसान नहीं था। क्योंकि यह तो पक्का है कि शाऊल अब अपने पूर्वजों के घर में नहीं रहता था (सम्भवत: उसे घर से निकाल दिया गया था), क्योंकि वह बहुत यात्राएं करता था इसलिए उसे ढूंढ़ना आसान काम नहीं था। तथापि, बरनबास दृढ़तापूर्वक लगा रहा, ''और जब उस से मिला तो उसे अन्ताकिया में लाया'' (आयत 26क)।

हम नहीं जानते कि शाऊल ने किसी अन्यजाति में प्रचार किया या नहीं। सम्भवत:, कुरनेलियुस के मसीही बनने की बात और/अथवा अन्ताकिया के काम की बात उस तक पहुंची। परन्तु, सम्भवत:, यदि उसने अन्ताकिया आने से पहले गैर-यहूदियों के साथ कोई काम किया तो वह बहुत कम था। बरनबास के साथ अन्ताकिया के लोगों में प्रचार करते और शिक्षा देते हुए, उसने अवश्य सोचा होगा, ''अन्तत: मैं अपना विशेष मिशन पूरा करना आरम्भ कर रहा हूं!''

बरनबास और शाऊल की एक अच्छी टीम बन गई थी। ''और ऐसा हुआ कि वे एक वर्ष तक कलीसिया के साथ मिलते और बहुत लोगों को उपदेश देते रहे'' (आयत 26ख)। अक्षरश:, ''वे कलीसिया के साथ *इकट्ठे होते,* और शिक्षा देते।'' यरूशलेम की कलीसिया की तरह, अन्ताकिया की कलीसिया निर्धारित समय पर इकट्ठी होती थी। उनके इकट्ठा होने पर न केवल कलीसिया के सदस्य ही वहां होते थे; बल्कि वे अपने मित्रों और परिवारों को भी साथ लाते थे जिन्हें वचन की शिक्षा दी जा सकती थी। इसलिए, बरनबास और शाऊल ''बहुत लोगों को उपदेश'' देने के योग्य हो सके और अन्ताकिया की कलीसिया बढ़ने और उन्नति करने लगी।

पहली बार ''सभी'' चेलों ''के लिए'' नाम का उपयोग हुआ (11:26)

इस पाठ के आरम्भ में ध्यान दिए गए विशेष पद के लिए यह पृष्ठभूमि है: ''और चेले सब से पहिले अन्ताकिया ही में मसीही कहलाए'' (आयत 26ग)।[28]

''मसीही'' और अंग्रेज़ी शब्द ''क्रिश्चियन'' एक लिप्यान्तरित यूनानी शब्द हैं।[29] शब्द का दो-तिहाई से अधिक ''मसीह'' है, जिसका अर्थ है ''अभिषिक्त'' और यह अद्‌भुत तरीके से यीशु की ओर संकेत करता है (2:36)। क्रिश्चियन के अन्त में आने वाला शब्द ''इयन'' स्वामित्व के महत्व को बताता है। इसका प्रयोग दुनियावी लेखों में किसी व्यक्ति विशेष की सम्पत्ति के लिए किया जाता था; विशेषकर इसका प्रयोग गुलामों के लिए उनके मालिकों की सम्पत्ति के रूप में किया जाता था। टीकाकार जे. डब्ल्यू. रॉबर्ट्स और लुईस फोस्टर अपनी व्याख्या में बताते हैं कि ''क्रिश्चियन'' अथवा ''मसीही'' का अक्षरश: अर्थ है ''मसीह की सम्पत्ति'' अर्थात, ''जो मसीह का है।'' पौलुस ने कहा,

''क्या तुम नहीं जानते ... तुम अपने नहीं हो? क्योंकि दाम देकर मोल लिए गए हो, ...'' (1 कुरिन्थियों 6:19, 20)!

''मसीही'' का आरम्भ किसने किया? बहुत से लेखक स्वत: ही मान लेते हैं कि यह नाम कलीसिया के शत्रुओं द्वारा मज़ाक में दिया गया। वे ऐसा क्यों मानते हैं? जैसे मैक्गर्वे ने टिप्पणी की, ''कि (नाम में) ऐसा कुछ भी नहीं है जो हमें नीचा दिखाता हो या फिर जिससे हम लज्जित हो जाएं।'' कई ज़ोर देकर कहते हैं कि यह तथ्य कि चेले ''मसीही *कहलाए*'' हम पर यह निष्कर्ष निकालने के लिए दबाव डालता है कि यह नाम अपमान-स्वरूप दिया गया था। तथापि, अनुवादित यूनानी शब्द, ''कहलाए'' का अर्थ कई बार ''परमेश्वर *द्वारा* कहलाए होता है।''[30] कम से कम एक अनुवाद में ''चेले अन्ताकिया में पहली बार *ईश्वरीय* रूप से मसीही कहलाए'' हैं[31] शायद अन्ताकिया में आत्मा की प्रेरणा पाए वक्ताओं में से एक ने (13:1) चेलों को यह पहली बार कहा; यह भी सम्भव है कि शाऊल ने, जो कि अन्यजातियों का प्रेरित था, इस शब्द का आविष्कार किया हो। एक बात निश्चित है कि इस शब्द का आविष्कार किसी ने भी किया हो, पतरस ने इस पर ईश्वरीय स्वीकृति की मुहर लगा दी जब उसने लिखा, ''यदि कोई *मसीही होने के कारण* दुख पाए, तो लज्जित न हो, पर *इस बात* (अंग्रेज़ी में इस नाम) के लिए परमेश्वर की महिमा करे'' (1 पतरस 4:16)।

नाम के मूल के बारे में ''कौन?'' और ''कैसे?'' से ''कब?'' ''कहां?'' और ''क्यों?'' पर विचार करना अधिक महत्वपूर्ण है। ''कब?'' और ''कहां?'' को लूका ने इस प्रकार लिखा: ''कब?'' - शाऊल के बरनबास के साथ ''पूरा एक साल'' काम करने के बाद; ''कहां?'' - चेले सब से पहले ''अन्ताकिया में'' मसीही कहलाए। ''कब?'' और ''कहां?'' शब्द हमें यशायाह की पुस्तक में आत्मिक सिय्योन के बारे में एक पद का स्मरण दिलाते हैं:[32] ''तब अन्यजातियां तेरा धर्म और सब राजा तेरी महिमा देखेंगे; और तेरा *एक नया नाम* रखा जाएगा जो यहोवा के मुख से निकलेगा'' (यशायाह 62:2)। क्या ''अन्यजातियां'' और ''राजा'' के उद्धरण आपको एक और प्रतिज्ञा का स्मरण नहीं दिलाते? शाऊल के विलक्षण मिशन के विषय में यीशु के क्या शब्द हैं? ''यह, तो *अन्यजातियों* और *राजाओं*, ... के साम्हने मेरा नाम प्रकट करने के लिए मेरा चुना हुआ पात्र है'' (प्रेरितों 9:15)। क्या यह केवल संयोग ही है कि जिस नगर से अन्यजातियों और राजाओं के लिए चुने गए प्रेरित ने अन्तत: अपने मिशन को पूरा करना आरम्भ किया, वहीं पर यीशु के अनुयायियों को ''एक नया नाम''[33] दिया गया था?[34]

यह भी हो सकता है कि ''मसीही'' नाम दिए जाने की सभी बातों को मैं न समझ सकूं, परन्तु दो बातें स्पष्ट हैं: (1) यह एक विशेष नाम है। और कोई पदनाम ऐसा नहीं है जो मसीह को इतनी महिमा देने के साथ-साथ, हमें उसके कर्ज़ का भी स्मरण दिलाता हो। (2) इसका आरम्भ एक विशेष स्थान पर अर्थात उस नगर में हुआ जहां यहूदियों और अन्यजातियों ने ''मसीह के होने'' के अपने साझे बन्धन को मिलकर स्वीकार किया!

आइए इस नाम को सम्मानपूर्वक अपनाएं और हमेशा वे कार्य करें जो उन लोगों को करने चाहिए, जो प्रभु के हैं!

अन्यजातियों को पहली बार ''सभी के लिए'' चिन्ता व्यक्त करने का अवसर मिला था (11:27-30)

बरनबास, शाऊल, और अन्यों के अन्ताकिया में नये मसीहियों के साथ काम करने पर, दक्षिण से कुछ लोग आए: ''उन्हीं दिनों में कई भविष्यवक्ता यरूशलेम से अन्ताकिया में आए'' (आयत 27)। भविष्यवक्ता आत्मा की प्रेरणा प्राप्त परमेश्वर के वक्ता थे।[35] पतरस ने पिन्तेकुस्त के दिन उल्लेख किया था कि कइयों को भविष्यवाणी का दान मिलेगा (2:17), परन्तु कलीसिया में भविष्यवक्ताओं का यह प्रथम उल्लेख है। यह तथ्य कि वे यरूशलेम से आए उस संगति का संकेत देता है जो यरूशलेम और अन्ताकिया की मण्डलियों में थी।

''उन में से अगबुस नाम का व्यक्ति खड़ा हुआ'' (आयत 28क)।[36] अगबुस एक प्रसिद्ध भविष्यवक्ता था; हम उससे फिर मिलेंगे (21:10, 11)। उसने ''आत्मा की प्रेरणा से यह बताया, कि सारे जगत में बड़ा अकाल पड़ेगा'' (11:28ख)। ''जगत'' विशेष तौर पर रोमी साम्राज्य को कहा गया है। लूका ने एक सम्पादकीय टिप्पणी जोड़ी: ''और वह अकाल क्लौदियुस के समय में पड़ा'' (आयत 28ग)। बाइबल के बाहर का इतिहास बताता है कि क्लौदियुस कैसर के शासन काल में (41–54 ई.), अकाल से रोमी साम्राज्य के बहुत से क्षेत्र प्रभावित हुए थे।[37]

हम नहीं जानते कि अगबुस और उसके मित्र अन्ताकिया में क्यों आए। शायद वे विशेष तौर पर सहायता मांगने के लिए आए थे। शायद सहायता मांगने का उनका कोई विचार नहीं था, बल्कि उन्हें कलीसियाओं में जाकर मसीहियों को सूचित करने के लिए भेजा गया था ताकि वे अकाल के कुप्रभाव से बचने के लिए कुछ तैयारी कर सकें। उनका जो भी मकसद हो, अन्ताकिया में चेलों का उत्तर तुरन्त और नि:स्वार्थ था: ''तब चेलों ने ठहराया, कि हर एक अपनी-अपनी पूंजी के अनुसार यहूदिया में रहनेवाले भाइयों की सेवा के लिए कुछ भेजे'' (आयत 29)।[38]

अगबुस के कहने के अनुसार, अकाल से जिस प्रकार फलस्तीन प्रभावित हुआ था उसी प्रकार सीरिया भी होना था, परन्तु अन्ताकिया में मसीहियों ने केवल अपने बारे में ही नहीं सोचा बल्कि यरूशलेम में अपने भाइयों तथा बहनों के बारे में भी सोचा। उन्हें उस प्रकार नहीं सताया गया था जैसे यरूशलेम में मसीहियों को; उनके काम उसी प्रकार नहीं छूटे थे जैसे यरूशलेम में बहुतों के छूट गए थे; उन्होंने सम्भवत: सोचा कि वे अकाल का सामना यरूशलेम में अपने भाइयों से अधिक अच्छी तरह कर सकते हैं। इसलिए, उन्होंने दक्षिण में भेजने के लिए भोजन और सामग्रियां तुरन्त इकट्ठी कीं।

आयत 29 में दो वाक्यांश मेरा ध्यान खींचते हैं: (1) ''हर एक।'' स्पष्टतया:, अन्ताकिया की मण्डली में *सभी* सदस्यों को अपने भाइयों की दशा से सरोकार था। (2)

"अपनी-अपनी पूंजी के अनुसार ...।" पुराने नियम में, परमेश्वर ने कुछ प्रतिशत चन्दा देने की आज्ञा दी थी।[39] नये नियम में प्रभु के कार्य के लिए दान देना "आमदनी के अनुसार" (1 कुरिन्थियों 16:2) निर्धारित होता है। इसके बराबर किसी और वित्तीय प्रणाली की कल्पना नहीं की जा सकती। जिनके पास बहुत है वे अधिक दें; जिनके पास कम है वे थोड़ा दें।

अन्ताकिया में रहने वाले चेले स्पष्टत: (कुछ सीमा तक) उसे लौटाने के अवसर को पाकर प्रसन्न थे जो यहूदी मसीहियों और विशेष तौर पर यरूशलेम की कलीसिया ने उनके लिए किया था। यहूदी मसीही उनके लिए उत्तम संदेश (सुसमाचार) लाए थे; यरूशलेम की कलीसिया ने अपना उत्तम व्यक्ति (बरनबास) भेजा था; अब *उन्होंने* उत्तम दान जो *वे* भेज सकते थे, भेजना था। पौलुस ने बाद में गलतियों की कलीसिया के नाम लिखा, "जो वचन की शिक्षा पाता है, वह सब अच्छी वस्तुओं में सिखाने वाले को भागी करे" (गलतियों 6:6)। अन्ताकिया के मसीहियों ने, बिल्कुल में, ऐसा ही किया।

हाल ही के वर्षों में, कई लोगों ने मण्डलियों के एक दूसरे के साथ सहयोग करने के ऐसे नियम बनाए हैं जो परमेश्वर ने नहीं बताए।[40] मैं इन लोगों के डर को तो समझता हूं, परन्तु मुझे मनुष्य के बनाए सिद्धान्तों पर अफ़सोस होता है जो मण्डलियों को अलग रहने के लिए प्रोत्साहित करते हैं और ऐसे कानून बनाने का प्रयास करते हैं कि कैसे एक मण्डली दूसरी के प्रति प्रशंसा और समर्थन व्यक्त कर सकती है। हमें एक दूसरे के लिए प्रेम और चिन्ता व्यक्त करने वाली थोड़ी सी नहीं, बल्कि *बहुत* मण्डलियों की आवश्यकता है।

अन्ताकिया में मसीहियों ने न केवल "ठहराया"; बल्कि उन्होंने अपने निश्चय को पूरा भी किया। हम पढ़ते हैं, "और उन्होंने ऐसा ही किया; और बरनबास और शाऊल के हाथ प्राचीनों के पास कुछ भेज दिया" (आयत 30)।[41] केवल अच्छी मंशाएं कभी भी भूखे पेट को नहीं भर सकतीं या कांपते हुए शरीर को ढक नहीं सकतीं। ध्यान दें कि मसीहियों ने अपने प्रेम के दान को आगे पहुंचाने का कार्य बरनबास और शाऊल को सौंपा। बरनबास को यरूशलेम की कलीसिया ने भेजा था और शाऊल को बरनबास लाया था; परन्तु दोनों ने अन्ताकिया में भाइयों का भरोसा पा लिया था।

दान प्रेरितों के नहीं, बल्कि "प्राचीनों" के हाथ में दिया जाना था। प्रेरितों के काम में यह पहली बार है जहां हम कलीसिया में अगुओं के बारे में पढ़ते हैं कि उन्हें "प्राचीन"[42] कहा गया। "प्राचीन" यहूदी कलीसियाओं के ऐल्डरों या यरूशलेम की कलीसिया के ऐल्डरों को कहा गया हो सकता है। क्योंकि, परोपकार के अपने मिशन के अन्त में, "बरनबास और शाऊल ... *यरूशलेम* से लौटे" (12:25), सम्भवत: वे चंदा लेकर यरूशलेम में गए होंगे और यरूशलेम के प्राचीनों ने उसे बांट दिया।[43] कलीसिया का नेतृत्व प्रेरितों के हाथों से प्राचीनों को दिया जाने वाला था। कलीसिया में प्रेरिताई का प्रबन्ध थोड़ी देर के लिए था। प्राचीनों अर्थात ऐल्डरशिप का प्रबन्ध स्थाई था।

यहां वचन में हमें पारस्परिक प्रेम का अद्‌भुत उदाहरण मिलता है जो प्रभु की कलीसिया की विशेषता होनी चाहिए। यरूशलेम की कलीसिया ने बरनबास को भेजकर

अन्ताकिया की कलीसिया के लिए अपना समर्थन दिखाया। अन्ताकिया की कलीसिया ने सामग्री भेजकर यरूशलेम की कलीसिया के लिए अपना समर्थन दिखाया। दोनों मण्डलियां स्वतन्त्र थीं; किसी पुरोहित-तन्त्र ने एक दूसरे की सहायता के लिए उन्हें आदेश नहीं दिया था; उन्होंने यह सब *प्रेम* से किया।

एक बार एक छोटा लड़का जिसका हाथ कटा हुआ था, बाइबल क्लास में आया। शिक्षक ने क्लास के अन्त तक स्थिति को बड़ी अच्छी तरह सम्भाला। उसने अपने हाथों की अंगुलियों को जोड़ते हुए कहा, ''चलो चर्च बनाते हैं।''[44] अचानक उसे अहसास हुआ कि वह छोटा लड़का इसमें भाग नहीं ले सकेगा। असमंजस में पड़ा वह सोच ही रहा था कि क्या किया जाए, कि क्लास में से एक लड़की उस लड़के के पास गई, उसने अपने हाथ उसके हाथों से लगाए, और कहने लगी, ''चलो मिलकर चर्च बनाते हैं।'' यद्यपि हम में से हर कोई एक स्वतन्त्र, स्वायत्त मण्डली का भाग है, परन्तु हमारे लिए हाथ मिलाना और ''मिलकर कलीसिया को बनाना'' आवश्यक है!

सारांश

''प्रेरितों के काम, भाग-1'' में 2:42-47 पर आधारित, एक पाठ, जिसका शीर्षक था ''कलीसिया जिसका सदस्य बनना मैं प्रिय जानूंगा।'' 11:19-30 में हम एक और मण्डली को देखते हैं जिसका सदस्य बनना मैं पसन्द करूंगा, वह मण्डली अन्ताकिया की कलीसिया है। (1) यह सभी लोगों से सरोकार रखने वाली एक मण्डली थी, चाहे वे किसी भी जाति अथवा पृष्ठभूमि से हों। (2) यह सुसमाचार प्रचार करने अर्थात सब के साथ शुभ समाचार बांटने वाली मण्डली थी। (3) यह एक नि:स्वार्थ मण्डली थी, इस बात से बेफिकर कि श्रेय किसे मिला। (4) यह मसीह को महिमा देने वाली और गर्व से मसीह का नाम अपनाने वाली मण्डली थी। (5) यह एक प्रशंसनीय अर्थात प्रशंसा व्यक्त करने वाली मण्डली थी। (6) यह एक बढ़ने वाली मण्डली थी क्योंकि परमेश्वर ने उनके प्रयासों को आशीष दी थी। इतने थोड़े शब्दों में हमें ''विकास की बात'' और कहीं पर भी पढ़ने को नहीं मिलती: ''प्रभु का हाथ उन पर था, और बहुत लोग विश्वास करके प्रभु की ओर फिरे''; ''और और बहुत से लोग प्रभु में आ मिले''; ''... वे ... बहुत लोगों को उपदेश देते रहे ...'' (आयतें 21, 24ख, 26)। यदि हम चाहते हैं कि मण्डलियों में वे गुण हों, तो हमें ऐसे गुणों वाला सदस्य बनना आवश्यक है।

अन्त में, अपने आप को उन सच्चाइयों के प्रकाश में परखिए जिन्हें हमने वचन से सीखा है। हमने इस विशेष पाठ का आरम्भ ''पहली बातों'' की बात करने से किया था। हो सकता है कि गम्भीरता से आत्मिक कोशिश आपके लिए पहली बार हो, परन्तु ऐसा करने से आपको जीवन में आशीष ही मिलेगी। कई लोग यह भी पाएंगे कि वे स्पष्ट रूप

से मसीह का नाम नहीं पहन सकते क्योंकि वे अभी उनकी तरह नहीं हैं, जो अन्ताकिया में मन फिराने और बपतिस्मा लेने से ''प्रभु की ओर मुड़े'' थे। यदि ऐसा है, तो प्रभु की आज्ञा मानने को टालें नहीं। *एक मसीही* के रूप में, अर्थात जो मसीह *का* है, आपके जीवन में आपका यह दिन *पहला* हो सकता है!

विजुअल-एड नोट्स

''मसीही'' नाम को महत्व देने के लिए, एक बोर्ड पर ''मसीही'' शब्द लिखें। ध्यान दें कि इसका दो-तिहाई से अधिक भाग ''मसीह'' है। फिर ध्यान दें कि ''ई'' की मात्रा अन्त में ही लगती है। अंग्रेज़ी के शब्द ''क्रिश्चियन (Christian)'' को भी इसी प्रकार लिख सकते हैं। इसके अन्त के अक्षर ''ian'' से भाव है ''की संपत्ति'' अथवा ''से सम्बन्धित।'' ''मसीही'' अथवा ''Christian'' के नीचे ज़ोर देने के लिए ''मसीह का जन'' और ''जिसका सम्बन्ध मसीह से है'' लिख लें।

(CHRIST) (IAN)
CHRIST'S ONE
जिसका सम्बन्ध मसीह से है।

ये शब्द किसी कागज़ पर भी लिखे जा सकते हैं।

प्रवचन नोट्स

अन्ताकिया के लोगों में बरनबास के संदेश का सार एक अच्छा पाठ बना देगा: ''वह ... आनन्दित हुआ; और सब को उपदेश दिया कि तन मन लगाकर प्रभु से लिपटे रहो'' (आयत 23)। बहुतेरे लोग मसीही जीवन आरम्भ तो करते हैं, परन्तु इसे छोड़ देते हैं! हमें बरनबास जैसे लोगों की अभी भी आवश्यकता है जो हमें यह कहकर उत्साहित कर सकें कि ''तन मन लगाकर प्रभु से लिपटे रहो।'' इस पाठ का शीर्षक ''प्रभु से लिपटे रहो'' भी हो सकता है, जिसके मुख्य विचार (1) आशिषों को स्मरण रखें (''वह आनन्दित हुआ''), (2) अपने भाइयों को स्मरण रखें (''सबको उपदेश दिया''), (3) अपनी वचनबद्धता को (''तन मन लगाकर'') स्मरण रखें और (4) अपने प्रभु को स्मरण रखें (''प्रभु से लिपटे रहो'')।

पाद टिप्पणियां

[1]अन्ताकिया के बारे में पहले हम 6:5 में पढ़ते हैं। [2]उसने अन्ताकिया की बन्दरगाह, सिलूकिया (13:4) का नाम अपने नाम पर रखा। [3]सोलह अन्य नगरों को भी इसी प्रकार सम्मानित किया गया था। 13:14 में हमें एक और अन्ताकिया मिलेगा। [4]रोम और सिकन्दरिया सब से बड़े थे। अन्ताकिया की जनसंख्या पन्द्रह लाख

से अधिक थी।[5]दंत-कथा के अनुसार, डैफ़नी ने स्वयं लारेल (चमकदार फूलों वाली) झाड़ी बनकर अपना बचाव किया था।[6]पृष्ठ 55 पर मानचित्र देखिए।[7]बाद में हम फीनीके, सूर और सैदा में मसीहियों के बारे में पढ़ते हैं (15:3; 21:3-7; 27:3)।[8]इसलिए, जब बरनबास और शाऊल वहां ''पहली मिशनरी यात्रा'' पर गए तो कुप्रुस ऐसा क्षेत्र नहीं था जहां पहले कोई गया न हो।[9]19 से 30 आयतों को पिछले भाग के साथ मिलाती हुई, आयत 19 ''सो'' के साथ आरम्भ होती है। ''सो'' का अनुवाद ओउन (*oun*) से हुआ है, जिसका अर्थ है ''इसलिए।'' यह बताने के बाद कि अन्ततः पौलुस ने कलीसिया के अगुओं को कैसे समझाया कि अन्यजातियों को भी सुसमाचार ग्रहण करना चाहिए, लूका ने फिर अन्यजातियों को प्रचार करने के जैसे व्यावहारिक परिणाम का ब्यौरा दिया।[10]कुरेने उत्तरी अफ्रीका का एक नगर था। कुरेने से आए यहूदी पिन्तेकुस्त के दिन उपस्थित थे (2:10); स्पष्टतः उन में से कुछ मसीही बन गए थे। यह सुझाव दिया गया है कि शमौन कुरेनी (मत्ती 27:32) उन में से एक हो सकता है जो सुसमाचार को अन्ताकिया में ले गए।

[11]इस तथ्य में कुछ विशेष बात देखी जा सकती है कि उन्होंने अन्यजातियों में ''*मसीह* यीशु'' के बजाय ''*प्रभु* यीशु'' का प्रचार किया। ''मसीह'' की धारणा अन्यजातियों के लिए कोई अर्थ नहीं रखती होगी; ''प्रभु'' की धारणा का उनके लिए बहुत अर्थ होगा।[12]8:4 की तरह, यूनानी शब्द के अनुवाद ''सुसमाचार सुनाते'' का अर्थ केवल प्रचार नहीं बल्कि यह है कि वे सुसमाचार का प्रचार करते रहे। अंग्रेज़ी के न्यू सेंचुरी वर्ज़न में ''उन्हें प्रभु यीशु के शुभ समाचार की बात बताते'' है।[13]6:1 में इसी प्रकार का एक शब्द यूनानी बोलने वाले *यहूदियों* के लिए इस्तेमाल किया गया। तथापि, संदर्भ, यहां मांग करता है कि हम इन यूनानी भाषा बोलने वालों को यूनानी बोलने वाले *अन्यजाति* समझें।[14]उन में से कइयों का नाम 13:1 में दिया जा सकता है।[15]हम नहीं जानते कि उनमें से जो अन्ताकिया गए थे कोई आश्चर्यकर्म दिखा सकता था, परन्तु यह सम्भव है कि उन में से कइयों पर किसी प्रेरित ने पहले हाथ रखे होंगे।[16]हिन्दी और यूनानी दोनों में, विश्वास करना और मुड़ना (मनपरिवर्तन) दो अलग-अलग कार्य हैं, जैसे 3:19 में मन फिराना और लौट आना अलग-अलग हैं। ''प्रेरितों के काम, भाग-2'' में 3:19 पर नोट्स देखिए।[17]''प्रेरितों के काम, भाग-1'' में 2:41, 47 पर नोट्स देखिए।[18]क्योंकि ऐसा कोई संकेत नहीं है कि यहूदियों में प्रचार के (11:19) फलस्वरूप बहुत से लोग मसीही बने, और शास्त्र कहता है कि बहुत से अन्यजाति लोग मसीही बने थे (11:20, 21), इसलिए मेरे ख्याल में यह कहना उचित है कि अन्ताकिया की कलीसिया में अधिकतर अन्यजाति थे।[19]यदि दूसरे यहूदी न भी हों, तो भी यहूदी चेले जिन्होंने वहां प्रचार किया था, उस मण्डली का भाग थे।[20]बरनबास बारह में से नहीं था, इसलिए उसका काम उनके काम से भिन्न था। पतरस और यूहन्ना ने सामरिया में नये मसीहियों पर अपने हाथ रखकर उन्हें अद्‌भुत कार्य करने की शक्ति दी थी। बरनबास वे काम नहीं कर सका; उस ने लोगों में प्रचार ही किया।

[21]उन्होंने एक भिखारी को चंगा करके भीड़ को इकट्ठा कर लिया और फिर उस भीड़ में प्रचार किया।[22] कई लोगों का मत है कि प्रेरितों को नहीं भेजा गया था ''क्योंकि वे सभी प्रचार करने के लिए बाहर गए हुए थे।'' शायद यह सत्य था, परन्तु यह अधिक सम्भव है कि बरनबास को भेजा गया क्योंकि वह अन्ताकिया के हालात को प्रेरितों में किसी से भी अधिक अच्छी तरह से सम्भाल सकता था। (कई लोगों ने सुझाव दिया है कि बरनबास ने अपने आप को इस काम के लिए स्वेच्छा से दिया होगा।)[23]''प्रेरितों के काम, भाग-2'' के पृष्ठ 7 पर ''यूनानी भाषा बोलने वाले यहूदी'' वाक्यांश पर नोट्स देखिए।[24]निःसंदेह उनके निर्णय में परमेश्वर के आत्मा का भाग था।[25]स्पष्टतः, बरनबास एक प्रभावशाली प्रचारक था, परन्तु उसके प्रचार का यह संक्षिप्त सा विवरण ही सम्भालकर रखा गया है।[26]''पवित्र आत्मा से परिपूर्ण'' का अर्थ है ''पवित्र आत्मा द्वारा नियन्त्रित'' और इसका प्रयोग चमत्कारी अथवा गैर-चमत्कारी अर्थ में किया जा सकता है। बरनबास आत्मा की प्रेरणा प्राप्त एक नबी और/अथवा शिक्षक था (13:1), इसलिए वाक्यांश का अर्थ चमत्कारी हो सकता है। तथापि, संदर्भ में, संकेत इस तथ्य की ओर लगता है कि बरनबास के जीवन से प्रकट था कि आत्मा उस में वास कर रहा था (गलतियों 5:22, 23)।[27]बरनबास को आत्मिक दान मिला था (13:1), उसका शाऊल को ढूंढना आत्मा के निर्देशन में 13:2 के पूर्वज्ञान में हो सकता है।[28]लूका के शब्द संकेत देते हैं कि जिस समय वह लिख रहा था उस समय ''मसीही'' एक सुपरिचित पदनाम था, और

उसे लगा कि उसके आरम्भ के बारे में संक्षिप्त व्याख्या देनी उपयोगी होगी। [29]अर्थात, यह एक यूनानी शब्द है जिसे यूनानी अक्षरों के लिए समान अंग्रेज़ी अक्षर लगाकर अंग्रेज़ी शब्द बनाया गया है। [30]यूनानी शब्द (*क्रिमेटिज़ो*) का अनुवाद प्रेरितों 10:22 में ''स्वर्गदूत से चेतावनी'' और मत्ती 2:12, 22; इब्रानियों 8:5; 11:7 में परमेश्वर से ''चितौनी'' किया गया है। इसका प्रयोग लूका 2:26 और इब्रानियों 12:25 में ईश्वरीय संचार का संकेत देने में भी किया गया है।

[31]ह्यूगो मैकॉर्ड'ज़ न्यू टैस्टामेंट ट्रांसलेशन ऑफ़ द ऐवरलास्टिंग गॉस्पल (हेंडरसन, टेनिसी: फ्रीड हाईमैंज़ कॉलेज, 1988)। [32]संदर्भ में, नबी यरूशलेम से बात कर रहा था। नई वाचा में, यरूशलेम के भौतिक नगर का कोई महत्व नहीं रहा। आज परमेश्वर का विशेष निवास स्थान भौतिक यरूशलेम में भौतिक मन्दिर नहीं है; परमेश्वर अपने लोगों अर्थात कलीसिया में निवास करता है। [33]मसीह के अनुयायियों के अन्य पदनाम–भाई, चेले, इत्यादि नये नहीं थे, बल्कि उनके किसी न किसी रूप का प्रयोग यहूदी धर्म में होता रहा था। [34]क्योंकि आत्मा की प्रेरणा प्राप्त किसी लेखक ने यह नहीं कहा कि प्रेरितों 11:26 यशायाह 62:2 का पूरा होना है, हम इस बात पर हठधर्मी नहीं कर सकते। तथापि, लगता है, कि प्रबल सम्भावना की बात यही है। [35]''प्रेरितों के काम, भाग-1'' में शब्दावली में देखिए ''भविष्यवक्ता।'' [36]वैस्टर्न टैक्सट, इस परम्परा पर ध्यान दिलाता हुआ कि *लूका* मूलतः अन्ताकिया से था, आयत 28 का आरम्भ ''जब *हम* इकट्ठे हुए थे...'' से करता है। [37]अकाल से यहूदिया के साथ-साथ रोम, यूनान और मिस्र भी प्रभावित हुए। जोसेफस के अनुसार, अकाल जिसने यहूदिया में सर्वनाश किया, लगभग 45-47 ई. में आया। [38]बरनबास, जो पहले ही अपनी दयालुता के कारण प्रसिद्ध था (4:36, 37), ने सम्भवतः इसके लिए उत्साहित किया। [39]मांगा जाने वाला प्रतिशत वह दशमांश, अर्थात दस प्रतिशत था (ध्यान दें मलाकी 3:8, 10)। [40]पृष्ठ 177 पर ''सहयोग: व्यवस्था अथवा प्रेम'' पर लेख देखिए।

[41]गलतियों 2:1-10 यरूशलेम में शाऊल/पौलुस की दूसरी यात्रा के विषय में बताता है। यह प्रेरितों 11 की परोपकारी यात्रा के समय हुआ हो सकता है या ऐसे भी हो सकता है कि यह वही घटना हो जिसका वर्णन प्रेरितों 15 में मिलता है। यह उसी समस्या की बात करता है जो प्रेरितों 15 में हुई थी, इसलिए गलतियों 2 पर विचार प्रेरितों 15 को मिलाकर ही करेंगे। [42]शब्द ''प्राचीनों/ऐल्डरों'' के अर्थ पर चर्चा के लिए, अगले एक भाग में 14:23 और 20:28 पर नोट्स देखिए। [43]इस सम्भावना को इस तथ्य से और बल मिलता है कि हमें बाद में बताया जाता है कि यरूशलेम की कलीसिया में प्राचीन थे (15:2), परन्तु हमें यह कहीं नहीं बताया गया कि यहूदिया की अन्य मण्डलियों में प्राचीन थे या नहीं। बहुत से लोग जो ''कलीसियाई सहयोग के विशिष्ट उदाहरण'' की बात दृढ़ता से कहते हैं, इस सम्भावना से इन्कार करते हैं कि यरूशलेम के प्राचीनों ने सारे यहूदिया में चन्दा बांटा क्योंकि इससे उस ''नमूने'' का उल्लंघन होगा जिसकी खोज उन्हें लगता है कि उन्होंने की। [44]बच्चों के अंगुलियों के इस खेल में, पहले हाथ और अंगुलियां एक प्रार्थना भवन बनाती हैं, फिर इमारत के ऊपर एक लाट, और फिर अन्त में लोगों को इमारत के अन्दर दिखाती हैं।